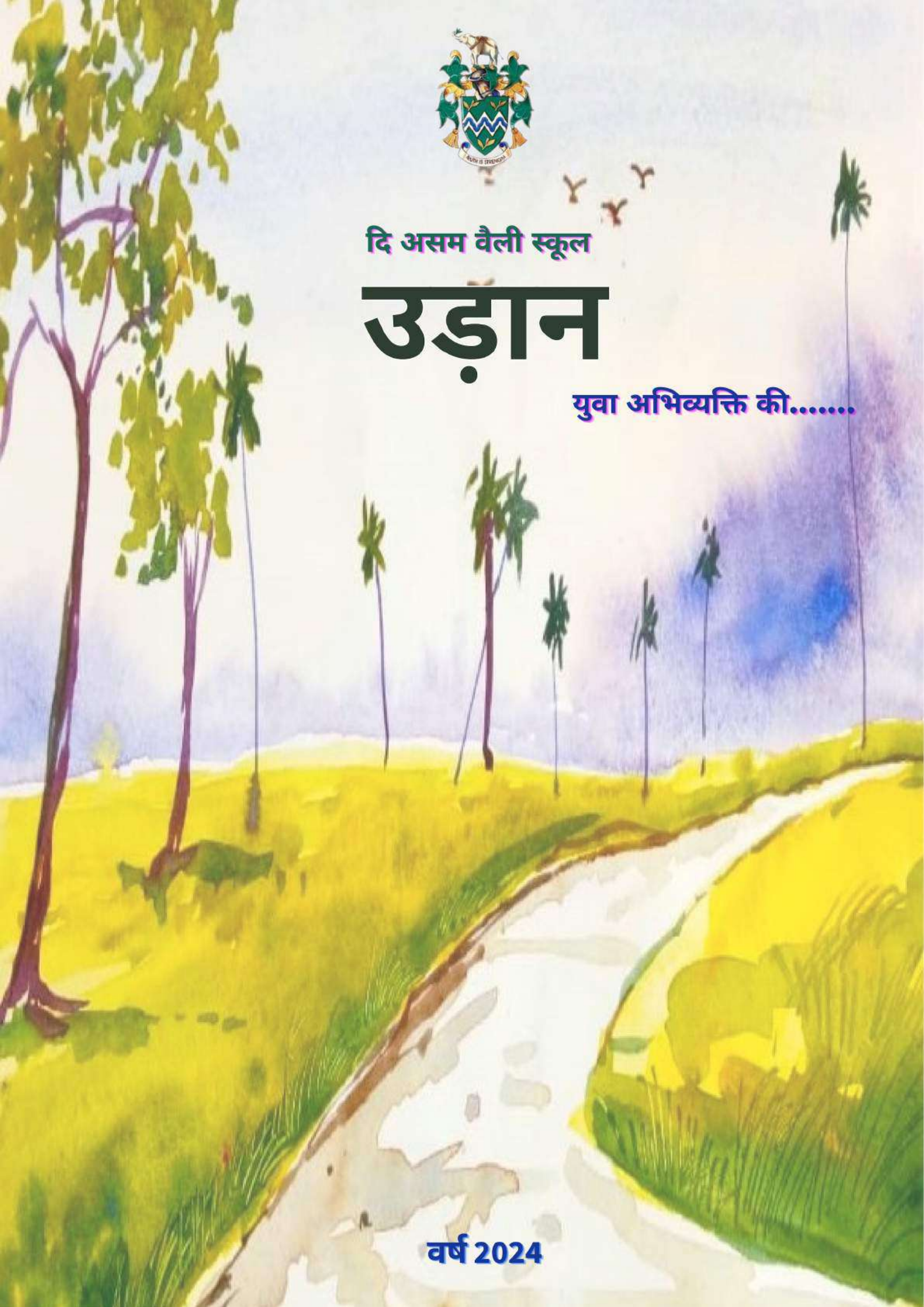

दि असम वैली स्कूल

उड़ान

युवा अभिव्यक्ति की.......

वर्ष 2024

नेतृत्व कौशल

नेतृत्व एक ऐसी कला है जो एक आम इंसान को एक विशेष इंसान के रूप में बदलकर रख देती है। कोई भी व्यक्ति पैदायशी किसी भी कला में पारंगत नहीं होता बल्कि वह अपने प्रयासों, परिस्थितियों और कर्मनिष्ठा के बल पर किसी भी दिशा में आगे बढ़कर किसी भी क्षेत्र में निपुणता प्राप्त कर लेता है। एक अच्छे नेतृत्व के गुण वाला व्यक्ति जिस किसी भी दिशा में आगे की ओर कदम बढ़ाता है, अनायास ही जनता उस ओर अग्रसर हो जाती है। ऐसे महान नेताओं में महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस तथा सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि का नामोल्लेख किया जा सकता है। कभी-कभी समाज में ऐसे दृश्य भी दिखाई देते हैं, जब नेतृत्व करने वाला व्यक्ति अनेक समस्याओं में फँसा दिखाई देता है परंतु उसकी वे समस्याएँ दीर्घगामी नहीं होतीं। किसी कवि ने अपनी कविता में कहा भी है कि जब एक कर्मठ व्यक्ति किसी भी ओर अपने कदम बढ़ा देता है तो अनेक सफलता के मार्ग अपने आप खुलते चले जाते हैं।

एक कुशल नेता एक नए युग का सूत्रपात करता है। वर्षों से चली आ रही परंपराओं को समयानुसार मोड़ने की क्षमता एक योग्य नेतृत्व करने वाले में ही समाहित होती है। समाज की मजबूती समाज की परंपराओं और प्रथाओं से काफी हद तक प्रभावित होती है। मनुष्य समाज की सबसे छोटी इकाई है और जब मनुष्य सशक्त होता है तो उससे समाज में स्थिरता और विकास का वातावरण पैदा होता है। अक्सर हम सभी लोग आगे बढ़ने के लिए एक कुशल नेता का इंतज़ार करते रहते हैं और खुद आगे बढ़कर समाज को दिशा देने का प्रयास नहीं करते। हमारा मानना है कि हम बिना किसी नेता के आगे बढ़ ही नहीं सकते जबकि सत्यता ठीक इसके विपरीत होती है।

अंग्रेजों की गुलामी के समय से लेकर आज तक हम नेताओं का ही अनुसरण करते चले आ रहे हैं जबकि अपने समाज को दिशा देने के लिए हमें किसी एक ऐसे व्यक्ति की तलाश नहीं करनी चाहिए जो हमारे समाज को दिशा दे। हमें स्वयं अपने अंदर नेतृत्व के गुण पैदा करने चाहिए जो केवल पारिवारिक हित के लिए ही नहीं बल्कि समाजोपयोगी भी हों। मेरा मानना है कि नेतृत्व के गुण जन्मजात ही नहीं होते बल्कि इन गुणों को निखारा भी जा सकता है। यही कारण है कि आजकल आवासीय विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रतिनिधित्व करने वाले पदों को देकर उनमें ज़िम्मेदारियों को वहन करने की क्षमता का विकास करने का प्रयास किया जाता है।

आजकल हमारे देश की राजनैतिक उथल-पुथल इस बात का प्रमाण है कि राजनेता तो अनेक हैं लेकिन जो अपेक्षित नेतृत्व के गुण होते हैं, वे बहुत ही कम लोगों में दिखाई देते हैं। हाल ही के हुए लोकसभा चुनावों में यह देखने को मिला है कि देश की कई राजनैतिक पार्टियों में नेता तो अनेक हैं लेकिन नेतृत्व के गुणों के अभाव में उनकी राष्ट्रीय लोकप्रियता अत्यंत सीमित है। देश को विश्व पटल पर सम्मान दिलाने के लिए एक कुशल राजनेता की आवश्यकता होती है। जब हम अपने विद्यार्थियों में कुशल नेतृत्व के गुण पोषित कर सकेंगे, तभी हम अपने देश की राजनीति को विश्व की राजनीति के सामने सशक्त रूप में खड़ा कर पाने में समर्थ होंगे।

अभिरक्ष सरोहा
कक्षा – नवमीं

चमत्कारी पत्थर

उदयगिरि पर्वत की तलहटी में भावनगर नाम का एक गाँव था। उस गाँव में हातिम नाम का एक किसान रहता था। हातिम बहुत ही मेहनती था। उसके पास खेती के लिए बहुत ही थोड़ी ज़मीन थी। उसके माता-पिता का देहांत उसके बचपन में ही हो गया था। सुलेखा नाम की उसकी एक छोटी बहन भी थी। वह बहुत ही सुंदर और सुशील थी। हातिम ने अपनी बहन की शादी न कर पाने के कारण अपनी भी शादी नहीं की थी। वह अपनी इकलौती बहन की शादी बहुत ही धूमधाम से करना चाहता था, परंतु धन के अभाव के कारण वह बहुत दुखी था।

एक दिन उसके गाँव में हिमालय के एक प्रसिद्ध संत पहुँचे। संत ने गाँव में सत्संग का आयोजन किया। हातिम ने उस सत्संग में जमकर लोगों की सेवा की और संत के भोजन की पूरी व्यवस्था का भार अपने ऊपर ले लिया। गाँव के लोग हातिम की इस सेवा से बहुत ही प्रभावित थे। सत्संग के आखिरी दिन भोजन के बाद संत हातिम से मिलने उसके घर पहुँच गए। हातिम ने उस संत का अच्छा सत्कार किया। यह देखकर संत हातिम से बहुत खुश हो गए। शाम के भोजन के बाद संत ने हातिम को अपने पास बुलाया और कहा कि क्या बात है ? तुम बहुत दुखी दिखाई दे रहे हो ! हातिम कुछ ठहरकर बोला, “गुरुदेव, मैं अपनी बहन के विवाह को लेकर बहुत दुखी हूँ। मैं उसकी शादी बहुत ही धूमधाम से करना चाहता हूँ परंतु पैसों की कमी के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा है।" संत हातिम की बात चुपचाप सुनते रहे।

हातिम दुखी मन से संत की ओर निहारते हुए उनके पैरों में गिर पड़ा। संत को हातिम पर दया आ गई। संत ने हातिम को चलते समय तीन पत्थर दिए और कहा कि जब तुम्हें पैसों की ज़रूरत हो, तो मेरा नाम लेकर एक पत्थर को किसी भी दिशा में फेंक देना। पत्थर जहाँ गिरे वहाँ तुम्हें खजाना मिल जाएगा और उस खजाने से तुम अपने सारे रुके काम कर सकोगे लेकिन ध्यान रखना कि दो पत्थर एक साथ मत फेंकना। हातिम बहुत खुश हो गया। उसने बार-बार शीश झुकाकर संत को धन्यवाद दिया।

संत के चले जाने के बाद हातिम ने तुरंत एक पत्थर फेंका और जहाँ वह पत्थर गिरा वहाँ उसे खोदने पर एक सोने के सिक्कों से भरा मटका मिला। उसने उन सोने के सिक्कों से बड़ी धूमधाम से अपनी बहन की शादी की। अब हातिम के मन में पत्थरों के जादुई कारनामें के कारण लालच आ गया था और उसने सोचा कि आखिर संत ने दो पत्थर एक साथ फेंकने को मना क्यों किया, ज़रूर ही इसमें कुछ बड़ा लाभ होने वाला होगा। अब उसने ठान लिया कि वह दोनों पत्थरों को एक साथ फेंककर ढेर सारी धन दौलत प्राप्त करेगा।

हातिम ने लालच में आकर, संत के मना करने के बाद भी बचे हुए दोनों पत्थरों को एक साथ फेंक दिया। दोनों पत्थर एक ही स्थान पर जाकर गिरे। जैसे ही हातिम ने वहाँ खुदाई चालू की तो देखा कि नीचे की ओर एक सुरंग जा रही थी। हातिम सुरंग से नीचे पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ एक सोने का दरवाज़ा है। वह सुरंग में सोने से भरे हुए कमरे को देखकर दंग रह गया। वहाँ उसने एक राजा को चक्की पीसते हुए देखा और उसी चक्की से सोना निकल रहा था।

राजा ने हातिम से कहा कि अच्छा हुआ कि तुम आ गए। अब तुम आकर जरा चक्की चलाओ और मैं थोड़ा आराम कर लूँ। जैसे ही हातिम ने चक्की चलाना प्रारंभ किया वैसे ही राजा वहाँ से निकलकर जाने लगा। जब हातिम ने उसे रुकने को कहा तो राजा बोला कि मैं भी तुम्हारी तरह लालच में आकर दोनों पत्थरों को एक साथ फेंक दिया था जिसके कारण यहाँ दस वर्षों से फँसा हुआ हूँ। अब जब तक कोई तीसरा लालची उन पत्थरों को एक साथ नहीं फेंकेगा तब तक तुम्हें इसी तरह चक्की चलानी पड़ेगी नहीं तो तुम मूर्ति में बदल जाओगे। यह कहकर राजा वहाँ से चला गया। अब हातिम को अपने लालची होने का पछतावा हो रहा था। हातिम के पास इंतज़ार के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। इसीलिए कहा जाता है कि लालच बुरी बला है।

सात्विक बानिक
कक्षा- आठवीं

जीवन की अभिलाषा

मनुष्य को शरीर इसलिए मिला है कि वह अपने समय का सदुपयोग कर जीवन को सफल बना सके। हर व्यक्ति को अपनी सभी जिम्मेदारियों को समझते हुए उन पर अधिक ध्यान देना चाहिए। जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए मानव को हर संभव प्रयास करना चाहिए। यदि हम जीवन के हर पल का आनंद और उत्साह के साथ स्वागत करें, तब बड़ी-बड़ी समस्याएँ भी आसानी से हल हो सकती हैं। हम सभी को जीवन में कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। आशा की डोर को कभी कमजोर नहीं पड़ने देना चाहिए। परेशानियों से घबराकर भागना कायरता की निशानी है। जीवन में जो भी लक्ष्य बनाएँ उसे पूरा करने के लिए सदैव संकल्पित रहें।

किसी ने ठीक ही कहा है – लक्ष्य न ओझल होने पाये, कदम मिलाकर चलना होगा।
कितनी भी आएँ बाधाएँ, उनसे डटकर लड़ना होगा॥

एक छोटी-सी कहानी आपके सामने रखता हूँ। एक बार एक राजा के पास दूसरे देश से कुछ लोग आए और कहा कि हमें अपने राज्य में जगह दीजिए। हम सब यहाँ अपना घर बनाना चाहते हैं। राजा ने उन लोगों को अपनी बात समझाने के लिए दो गिलासों में दूध मँगवाया। दूध एक बड़े गिलास और एक छोटे गिलास में था। राजा ने छोटे गिलास का दूध उस बड़े गिलास में डाल दिया। बड़े गिलास से दूध गिरने लगा। राजा ने कहा कि देखिए जो हालत इस गिलास की है। वही हालत हमारे इस राज्य की है। यहाँ पर पहले से ही जगह नहीं है। यदि आप लोग यहाँ आ जाएंगे तब हम आपको कहाँ जगह देंगे ? इसलिए आप लोग यहाँ से चले जाइए।

उन लोगों में एक बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति था। उसने राजा से कहा कि मैं आपकी बात का उत्तर देना चाहता हूँ। व्यक्ति ने राजा से आग्रह किया कि आप एक गिलास दूध और चीनी मँगवा दीजिए। उस व्यक्ति ने चीनी ली और उस दूध के गिलास में डाली और चीनी घोल दी। वह राजा से बोला, “हम ऐसे लोग हैं।" हम आपके राज्य में चीनी की तरह घुल जाएंगे और आपके राज्य में मिठास बढ़ा देंगे। राजा को उस बुद्धिमान व्यक्ति की बात समझ में आ गई और उसने उन लोगों को वहाँ रहने की अनुमति प्रदान कर दी।

परिवार में भी कभी-कभी आपस में थोड़ी बहुत कहासुनी होती रहती है। परिवार के सदस्यों को भी चीनी की तरह होना चाहिए, जिससे घर में मिठास बनी रहे। लोग आपस में प्रेम से रहें। सभी सबका सम्मान करें। हम सभी मनुष्यों के जीवन का अंतिम उद्देश्य यही होना चाहिए कि हम परिवार, समाज और देश में आपसी प्रेम और सौहार्द की स्थापना करें। यही जीवन की अभिलाषा और लक्ष्य होना चाहिए।

सूर्यांश गुप्ता
कक्षा- नवमीं

अब पछताए होत क्या !

संसार में समय को सबसे अमूल्य वस्तु माना गया है। किसी तरह धन-सम्पत्ति खो जाने या नष्ट हो जाने पर परिश्रम करके उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है, परंतु समय वह सम्पत्ति है, जो खो जाने या नष्ट हो जाने पर दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। समय निकल जाने पर व्यक्ति के पास हाथ मलने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता है। किसी ने सच ही कहा है—

समय की गति जो ना समझे, उसे नादान कहते हैं।
समय की गति जो पहचाने, उसे इंसान कहते हैं॥

विद्यार्थी जीवन में भी समय का सबसे अधिक महत्त्व है। हम सभी विद्यार्थियों को समय पर अपना काम करना चाहिए। जीवन का हर क्षण अनुशासन के साथ बिताना चाहिए। जो व्यक्ति इस संसार में समय का मूल्य समझता है और अपने कार्य को समय से करता है, उसे सफलता मिलती है। जितने भी महापुरुष बने, उन सबने समय को अच्छे तरीके से समझकर काम किया तभी उन्हें सफलता मिली है। हमें समय को पहचानकर अपनी कार्यकुशलता और बुद्धिमत्ता का सदुपयोग करना चाहिए।

हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मात्र आधा पल की भी देर कर देने वाला व्यक्ति, समय पर छूट जाने वाली रेलगाड़ी को कभी पकड़ नहीं पाता। देखते-देखते ट्रेन तो मीलों आगे निकल जाया करती है और उस पर यात्रा करने का इच्छुक व्यक्ति वहीं प्लेटफार्म पर खड़ा-खड़ा बस सोचता हुआ अपनी लापरवाही पर पछताता रह जाता है। ऐसे लोगों को अगली ट्रेन की प्रतीक्षा करनी पड़ती है और यह भी हो सकता है कि तब तक यात्रा का उद्देश्य भी समाप्त हो जाए। जो पाने के लिए उसे जाना था, वह उससे भी वंचित रह जाता है।

समय ही सत्य है। उसका सदुपयोग ही सफलता और समृद्धि का प्रतीक है। यही सोचकर समझदार व्यक्ति समय का एक पल भी बेकार की बातों या कामों में नहीं गँवाया करते। वे यह नहीं सोचते कि 'आज नहीं कल कर लेंगे' वे तो बस, आज और अभी अपना काम शुरू कर देते हैं क्योंकि वे अच्छे से जानते हैं कि कल कभी आया नहीं करता। विद्यार्थी जीवन, इस जीवन मूल्य को समझने का सबसे उपयुक्त समय है।

तुषार मलिक
कक्षा- नवमीं

साक्षात्कार : श्री कमर आलम

अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग

प्रश्नकर्ता : श्रीमान अपने मूल निवास स्थान तथा अपनी शिक्षा-दीक्षा के विषय में कुछ जानकारी दीजिए।

श्रीमान आलम : मैं देहरादून का मूल निवासी हूँ। मेरी शिक्षा-दीक्षा देहरादून में संपन्न हुई। अपने बचपन से ही मैं शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रुचि रखता था। मेरे घर में भी शिक्षा का अच्छा माहौल था जिसके कारण मेरी रुचि भी शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती चली गई। मैंने उच्च शिक्षा इंग्लिश एण्ड फॉरेन लैंग्वेज़ेज यूनीवर्सिटी हैदराबाद से की। शिक्षा के क्षेत्र में जाने की प्रेरणा मुझे अपने मौसा जी से मिली।

प्रश्नकर्ता : आपने शिक्षण कार्य कब और कहाँ से प्रारंभ किया ?

श्रीमान आलम : मैंने शिक्षण कार्य अपने गृह जनपद देहरादून से ही प्रारंभ किया जिसे प्राचीन काल में द्रोण नगरी के नाम से भी जाना जाता था। शिक्षण के क्षेत्र में अधुनातन एवं विविधात्मक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा मुझे विदेश की धरती तक ले गई।

प्रश्नकर्ता : आपने किन-किन देशों में शिक्षण कार्य किया और वहाँ का अनुभव कैसा रहा ?

श्रीमान आलम : मैंने अपना शिक्षण कार्य बहरीन, ओमान, कजाकिस्तान, तंजानियाँ, इण्डोनेशियाआदि देशों में किया। वहाँ मैंने अनेक प्रकार की संस्कृतियों को समझा और उन क्षेत्रों के विद्यार्थियों के विषय में गहराई से जानने का भी मौका मिला। मुझे एक बात की बहुत खुशी है कि इन देशों में भी हमारे भारतीय शिक्षकों और विद्यार्थियों का अच्छा मान-सम्मान और दबदबा रहता है।

प्रश्नकर्ता : आप विदेशी विद्यालयों तथा दि असम वैली स्कूल में क्या समानता और भिन्नता देखते हैं ?

श्रीमान आलम : विदेशी विद्यालयों में गुरु-शिष्य संबंध भारतभूमि के विद्यालयों जैसे मजबूत नहीं है। विदेशों में शिक्षण एक व्यवसाय के रूप में देखा जाता है। विदेशों में विद्यार्थियों और शिक्षकों का संबंध क्रेता और विक्रेता के समान है। वहाँ बहुत कम ऐसे विद्यार्थी हैं, जो शिक्षकों को भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुसार मान-सम्मान देते हैं। मैं असम वैली स्कूल के विद्यार्थियों में अपने शिक्षकों के प्रति बहुत ही आदर भाव देखता हूँ। यदि बात मैं शैक्षणिक स्तर की करूँ, तो दि असम वैली स्कूल तकनीकी दृष्टि से विदेशी विद्यालयों से किसी भी तरह से कम नहीं है। यहाँ अध्यापन करने वाले शिक्षक आई. सी. एस. ई., सी. बी. एस. ई., आई. जी. एस. सी. तथा आई. बी. जैसे सभी बोर्डों को पढ़ा चुके हैं अथवा पढ़ाने की योग्यता रखते हैं। यहाँ के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में अपनेपन की भावना दि असम वैली स्कूल का सबसे बड़ा आकर्षण है। यहाँ के विद्यार्थी भी राजनीति जगत, चलचित्र जगत, संगीत जगत, तथा शासन-प्रशासन में अपनी जगह बना रहे हैं, जो बहुत ही गर्व की बात है।

प्रश्नकर्ता : दि असम वैली स्कूल में किन-किन चीज़ों ने आपको विशेष रूप से आकर्षित किया ?

श्रीमन आलम : मुझे दि असम वैली स्कूल की हर चीज़ बेहद पसंद है। यह विद्यालय अपने आप में एक अलग दुनिया है, जहाँ की हर चीज़ आपको बाँधे रखने में समर्थ है। यहाँ विलियम्सन मेगर सभागार, कलानिधि भवन, संगीत एवं नृत्य भवन, पुस्तकालय भवन, प्रयोगशालाएँ तथा विशाल क्रीड़ा क्षेत्र विद्यार्थियों के मुख्य आकर्षण हैं। यहाँ का मन मोहक वातावरण तथा चहुँ ओर फैली हुई हरियाली किसी का भी मन मोहने के लिए समर्थ हैं।

प्रश्नकर्ता : महोदय, अंत में आप दि असम वैली स्कूल के विद्यार्थियों को क्या संदेश देना चाहते हैं ?

श्रीमान आलम : मैं अपने विद्यार्थियों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि अपने सपनों को साकार करने के लिए किसी भी त्याग और समर्पण के लिए तैयार रहना चाहिए।

रणविजय सिंह
कक्षा- सातवीं

माँ की ममता

माँ दुनिया का एक ऐसा मूल्य और प्यारा शब्द है जिसका हम किसी तरह से मूल्यांकन नहीं कर सकते। माँ ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है। माँ को ऐसे ही ममता की मूरत नहीं कहा जाता बल्कि उनका दिल अपने बच्चों के लिए हमेशा ममता से भरा रहता है, इसी कारण उन्हें ममतामयी माँ की संज्ञा दी जाती है।

आजकल जैसे-जैसे हम सब बड़े हो रहे हैं, वैसे-वैसे हम सब अपने परिवार वालों से दूर होते जा रहे हैं। कभी-कभी हम अपना गुस्सा अपने परिवार वालों पर निकालते हैं और सबसे ज्यादा माँ इसकी शिकार हो जाती है। जिसने हमें जन्म दिया, हमारे लिए पूरी दुनिया से लड़ गई , हमें स्नेह से पाला और हमारी सभी इच्छाएँ पूरी कीं। उसने न जाने हमारे लिए कितना कुछ सहा फिर भी हम उसके ऊपर ही सारी गलतियों का बोझ डाल देते हैं। वह इतनी दरिया दिल होती है कि हमारी गलतियों पर माफ़ी माँगने पर वह तुरंत हमें माफ़ कर देती है, चाहें हम माफ़ी दिल से माँगें या फिर बाहर से, वह हमेशा माफ़ ही करती है। हम सब उसके भोलेपन का फ़ायदा उठाकर बार-बार गलतियाँ करते रहते हैं और उसका दिल तोड़ते रहते हैं क्योंकि हमें बहुत अच्छे से पता है कि वह हमारी सारी गलतियों को तो माफ़ ही कर देगी। उनका तो बस अपने बच्चों के प्रति यही धर्म है कि वह हमेशा उन्हें माफ़ करती रहे।

एक माँ के लिए उसके बच्चे ही सब कुछ होते हैं। कुछ बच्चे इस बात को समझते हैं और हमेशा उसकी इज्ज़त करते हैं और कुछ उसकी कोई परवाह नहीं करते। जीवन में सभी हमारा साथ छोड़ देते हैं, यहाँ तक कि अच्छे से अच्छा दोस्त भी साथ छोड़ देता है परंतु माँ एक ऐसा संबंध है जो कि कभी भी अपने बच्चे का साथ नहीं छोड़ती। इसका उदाहरण हम पशु-पक्षियों और जीव-जंतुओं से ले सकते हैं। एक चिड़िया किस तरह से अपने छोटे-छोटे बच्चों का ध्यान रखती है। वह उसके लिए भोजन की व्यवस्था पहले करती है और अपना बाद में खाती है। उसी तरह से हाथी और अन्य जानवर भी अपने बच्चों के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं और हमें उनसे सीखना चाहिए। ये सभी जीव-जन्तु अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं। वास्तव में माँ की ममता अपने बच्चों के लिए हमेशा एक जैसी ही होती है, चाहे वह कोई जानवर हो या फिर कोई इंसान। एक माँ ही किसी परिवार का आधार होती है और माँ के बिना सब कुछ अधूरा है। अगर हमें कोई ज्वर भी हो जाता है तो माँ हमारी बहुत अच्छे से देखभाल करती है और हमारी सेवा में लग जाती है। वह हमारे सिरहाने बैठकर हमें सहलाती है और हमें पुचकारती है। इन सबके बदले में माँ को कुछ भी नहीं चाहिए। वह निःस्वार्थ भाव से हमारी सेवा करती है। हमारी माँ ने जो प्यार हमें दिया है, उसे कभी नहीं भूलना चाहिए।

हम अपने जीवन में चाहे कितने ही बड़े क्यों न हो जाएँ हमें हमेशा अपनी माँ के प्रति कर्त्तव्य और ज़िम्मेदारियों को कभी नहीं भूलना चाहिए। हम मानें या न मानें परंतु हमारी जीत में ही उनकी जीत है और हमारी हार में ही उनकी हार है। अगर हम कुछ गलत करते हैं तो सभी हमारी माँ पर ही उँगली उठाते हैं और कहते हैं कि माँ ने कैसे संस्कार दिये हैं। हमें अपने कर्मों से माँ को शर्मसार नहीं करना है बल्कि अपने सत्कर्मों से उनका नाम उजागर करना है। हमें कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे कि हमारी माँ का नाम खराब हो। यही माँ के लिए सच्ची श्रद्धा होगी।

अद्विका अग्रवाल
कक्षा- दसवीं

भारतीय राजनीति और राजनेता

भारतीय राजनीति, वादों, दान और व्यंग्य का एक रमणीय मिश्रण है। आजकल देखा जाता है कि राजनैतिक पारदर्शिता और इच्छाशक्ति को लेकर लोगों में अनेक वैचारिक भिन्नताएँ दिखाई देती हैं। लोगों का मानना है कि राजनीति गंदी होती जा रही है, तो उन लोगों से एक प्रश्न करना चाहिए कि अगर राजनीति गंदी है, तो उसकी शुचिता के लिए उन्होंने क्या योगदान दिया है ? जब बात योगदान की आती है, तो अक्सर लोग चुप्पी साध लेते हैं। हमें दूसरों पर आरोप लगाना बहुत ही सहज लगता है, लेकिन जब खुद कुछ करने की बारी आती है, तो हम किनारा कर लेते हैं।

राजनेताओं के चरित्र पर हमेशा ही लोग चुटकुले बनाते हैं, व्यंग्य कसते हैं, तथा उन पर तरह-तरह के आरोप भी लगाते हैं। मैं उन सभी मित्रों से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या हमारे राजनेता इंसान नहीं हैं ? क्या उनकी ज़रूरतें नहीं हैं ? क्या उनका अपना परिवार नहीं है ? इतना सब कुछ होने के बाद भी, यदि कोई व्यक्ति अपने आपको जनता को समर्पित कर दे, देश के विकास के लिए अपना दिन-रात एक कर दे, तो क्या ऐसे व्यक्तियों के लिए हमारे मन में सम्मान नहीं होना चाहिए।

हमारे देश के कुछ बुद्धिजीवी मानते हैं कि राजनेताओं को बड़ा अधिक वेतन मिलता है। तो मैं, उन लोगों से पूछना चाहता हूँ कि जो व्यक्ति दिन-रात अपने चुनाव क्षेत्र में दौड़ लगाता है, उस क्षेत्र के विकास के लिए लाखों -करोड़ों रुपए अनुदान में लाने के लिए संसद में चीख-पुकार मचाता है, ऐसे कर्मठ तथा वाक्पटु नेता के लिए क्या एक अच्छा वेतन नहीं होना चाहिए ? यह अलग बात है कि उस अनुदान का उपयोग कुछ भ्रष्ट कर्मचारी अपने हित में कर, कुछ बूँदें नेताजी के दामन पर डाल कर उनके भोलेपन का लाभ उठा लेते हैं।

हमारे देश के राजनेताओं को मुफ़्त हवाई यात्रा की सुविधा, संचार के लिए एक बड़ी धनराशि और मेडिकल की फ्री सुविधा दी जाती है। तो मेरा मानना है कि वे इन सुविधाओं के सर्वथा योग्य हैं। यदि वे रोज़ाना यात्रा कर जनता के बीच नहीं जा सकेंगे, उनसे दूरसंचार पर वार्तालाप नहीं कर सकेंगे तो जनता की समस्याओं का निदान कैसे होगा ? जन रैलियों में शामिल कोई सिरफ़िरा यदि उनको थप्पड़ मार दे या पत्थर का प्रहार कर दे, तो उनके उपचार के लिए फ्री मेडिकल सुविधा का होना, कोई उन पर एहसान नहीं है। जो जनता के पागलपन का शिकार होते हों, तो उनकी देखरेख करना भी जनता का ही कर्त्तव्य है।

विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत में, चुनावों के समय, राजनेताओं और राजनैतिक पार्टियों पर व्यापार जगत से भारी चंदा लेने का आरोप लगाना, तो जैसे आम बात हो गई है। लेकिन हम भूल जाते हैं कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव जैसे पावन पर्व को, बिना चंदा लिए, कैसे बड़े-बड़े विज्ञापनों, प्रचारों, खान-पान, यातायात और डिजिटल संसाधनों से आकर्षक बनाया जा सकता है ? क्या आरोप लगाने वाले हमारे भाई-बहन, गणेश उत्सव, होली, दीपावली, बिहू और डांडिया जैसे उत्सवों पर चंदा इकट्ठा कर उसे आकर्षक बनाने का प्रयास नहीं करते ? तो फिर हमारे राजनेता ही इस बदनामी के शिकार क्यों ? अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा कि हमें समदर्शी होकर, राष्ट्र के विकास पर बल देना चाहिए। किसी पर भी दोषारोपण न करते हुए हमारे युवाओं को भी, राजनीति में प्रवेश कर, इस क्षेत्र को राष्ट्रोपयोगी बनाना चाहिए।

द्विज धकाल
कक्षा- बारहवीं

राजा हरिश्चंद्र और उनकी सत्यनिष्ठा

प्राचीन समय की बात है, अयोध्या नगरी में एक पराक्रमी और न्यायप्रिय राजा हरिश्चंद्र राज्य करते थे। वे सत्य और धर्म के प्रतीक माने जाते थे और उनकी प्रजा उन्हें बहुत मानती थी। उनकी रानी का नाम तारा था और उनके पुत्र का नाम रोहिताश्व था। राजा हरिश्चंद्र ने हमेशा सत्य का पालन किया और कभी भी असत्य का सहारा नहीं लिया। एक बार राजा हरिश्चंद्र ने अपने राज्य में एक महान यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के दौरान, महान ऋषि विश्वामित्र वहाँ आए और राजा से दान माँगा। राजा ने वचन दिया कि वह जो भी माँगेंगे, वह देंगे। ऋषि ने राजा से पूरा राज्य और उनकी सारी संपत्ति दान में माँग ली। राजा हरिश्चंद्र ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपना राज्य और संपत्ति ऋषि को दे दी और स्वयं अपने परिवार के साथ वन में रहने चले गए। राजा हरिश्चंद्र ने अपना राज्य तो छोड़ दिया, लेकिन सत्य का पालन नहीं छोड़ा। उन्होंने काशी नगरी में जाकर नौकरी करने का निश्चय किया। वहाँ पर उन्हें एक श्मशान घाट में काम मिला, जहाँ उन्हें मृतकों के अंतिम संस्कार के लिए कर वसूलना होता था।

एक दिन, राजा हरिश्चंद्र की रानी तारा अपने पुत्र के साथ जंगल में थी। वहां अचानक एक साँप ने रोहिताश्व को काट लिया और वह वहीं पर गिर पड़ा और मर गया। तारा अपने पुत्र को लेकर श्मशान घाट पहुँची और राजा हरिश्चंद्र से अंतिम संस्कार के लिए अनुमति माँगी। राजा हरिश्चंद्र ने अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए कर माँगा, लेकिन रानी के पास कुछ नहीं था। इस पर राजा हरिश्चंद्र ने कहा कि वह अपने आभूषण दे दें।

रानी ने अपने आभूषण दे दिए और रोहिताश्व का अंतिम संस्कार किया गया। यह देखकर ऋषि विश्वामित्र प्रकट हुए और उन्होंने राजा हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा की परीक्षा समाप्ति की घोषणा की। ऋषि ने राजा को उनका राज्य, संपत्ति और पुत्र रोहिताश्व वापस दे दिया। राजा हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा की गाथा सुनकर सभी देवता और ऋषि प्रसन्न हुए और उन्हें आशीर्वाद दिया।

इस कहानी से यह सीखने को मिलता है कि सत्य और धर्म का पालन करना सबसे महत्वपूर्ण है। कठिनाइयाँ चाहे जितनी भी आएँ, सत्यनिष्ठा और धर्म से विचलित नहीं होना चाहिए। राजा हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा और कर्त्तव्यपालन की गाथा आज भी हमें प्रेरणा देती है।

शांभवी चौहान
कक्षा- नवमीं

रास्ता खोजिए

सोनालिका को उसके स्कूल तक पहुँचने में मदद कीजिए:

क्या आप जानते हैं ?

- दुनिया में 11 प्रतिशत लोग अपने बाएं हाथ का इस्तेमाल करते हैं।
- अगस्त में सबसे ज्यादा लोग पैदा होते हैं।
- खाने का स्वाद उसमें सलाइवा (लार) मिलने के बाद ही आता है।
- औसतन लोग बिस्तर में जाने के 7 मिनिट में सो जाते हैं।
- भालू के 42 दांत होते हैं।
- मध्य प्रदेश में मूँछें रखने पर पुलिस अधिकारियों को वेतन वृद्धि मिलती है।
- एक साल में लगभग एक इंसान 50 लाख बार साँस लेता है।
- हर समय लगभग दुनिया के 5 करोड़ लोग नशे में रहते हैं।
- नील हरित शैवाल दुनिया का पहला जीव है।
- कंगारू उल्टा चल नहीं सकता और हाथी कूद नहीं सकता।

-साभार गूगल

अक्षत पोद्दार
कक्षा - बारहवीं

बचपन

यशप्रीत कौर
कक्षा - दसवीं

वो बचपन आज याद आता है।
वो स्कूल न जाने का बहाना
और जाने पर घंटों आँसू बहाना
वो पेंसिल का खो जाना
और दूसरों की रबर चुराना
आज बहुत याद आता है॥

वो ज़रा सी बात पर झगड़ना
और गलतियों पर बोल पड़ना
वो धूप में साइकिल चलाना
और आकर बीमार पड़ जाना
आज बहुत याद आता है।

वो कार्टून के लिए भाई से लड़ना।
और खींचते-खींचते रिमोट टूट जाना
वो छोटा भीम की किताबें लाना
स्कूल छोड़ कॉमिक्स में लग जाना
आज बहुत याद आता है।

वो भी क्या दिन थे।
जाने अनजाने में कब चले गए
वो शरारत, वो मस्तियाँ
क्या पता था, इतनी जल्दी समाप्त हो जाएंगे
दोस्तों से मिलना और झगड़ना
आज बहुत याद आता है।

वृक्ष और नदी

शांभवी चौहान
कक्षा - नवमीं

वृक्ष कहता नदी से,
तेरे बिना कुछ नहीं,
तू बहती है निरंतर,
मैं स्थिर खड़ा यहीं।

तेरी धारा में जीवन है,
प्यासों की प्यास बुझ जाती है,
मैं भार उठाए खड़ा हुआ,
मेरी भी कमर दुख जाती है।

कई नगर बसे तट पर तेरे,
अद्‌भुत सुंदरता पाते हैं,
पर भूल तेरे उपकारों को,
गंदगी तुम्हीं में बहाते हैं।

मैं खड़ा ताकता रहता हूँ
मानव की सारी करतूतें,
हमसे ही पाते जीवन हैं
एहसान हमारा ये भूले।

यह जन्म विधाता ने हमको
परहित के कारण दे डाला,
पर मानव की नादानी ने
जीना ही मुश्किल कर डाला।

श्रद्धा सुमन

अर्पित यादव
कक्षा - छठवीं

नन्हें कदमों से दौड़ भागकर,
इस आँगन में पढ़ना सीखा।

तुतलाती बोली में कविता
अ, आ , इ, ई लिखना सीखा।

समझा जीवन आदर्शों को,
स्नेह, गुरु के मन से सीखा।

जीवन सागर की गहराई,
कितनी होगी यह भी सीखा।

सब तरकीबें , भान समय का,
गुरु-चरणों में रहकर सीखा।

सारा विश्व ऋणी हो जिनका,
सबका सम्मान भी करना सीखा।

विद्यालय में प्यार बाँटना,
मिलजुल कर भी रहना सीखा।

चिड़िया रानी

हार्दिक पोद्दार
कक्षा - दसवीं

नील गगन में दौड़ लगाती
दूर-दूर तक उड़ती जाती,
रंग-बिरंगे पंख फैलाकर
सबको अपनी ओर लुभाती।

जीवन भर श्रम करती जाती
भागदौड़ से ना घबराती,
अपने बच्चों की खातिर वह
तरह-तरह के नीड़ बनाती।

कभी कहीं पेड़ों पर रहती
तेज हवा बरसातें सहती,
कभी नहीं कुछ हमसे कहती
केवल अपने गीत सुनाती।

संघर्षों से भरी कहानी
जीवन जैसे बहता पानी,
घर आँगन में गीत सुनाती
फुदक-फुदक कर हमें लुभाती।

अंतर खोजिए

नीचे दिखाए गए चित्रों में अंतर खोजिए:

नीचे दिखाए गए भारतीय मानचित्र में भारतीय राज्यों के नाम लिखिए:

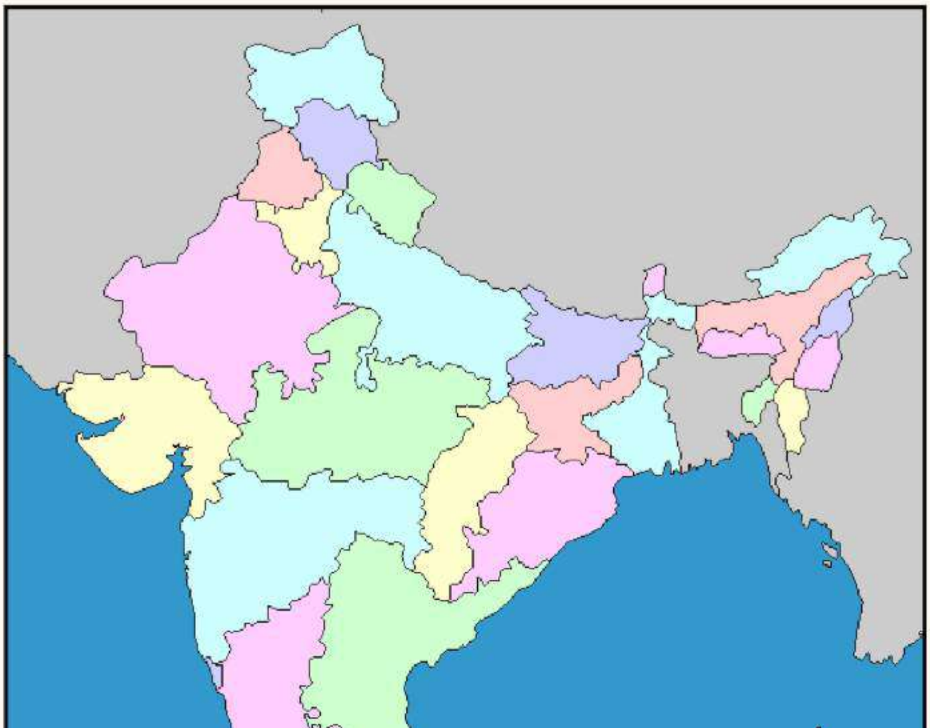

-साभार गूगल

अक्षत पोद्दार

कक्षा - बारहवीं

रचनात्मक कौशल

वर्ग पहेली में से नदियों का नाम तलाश कर पास में दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए :

गं	म	हा	न	दी
गा	य	मु	ना	न
गो	रा	चि	वे	र्म
दा	वी	ना	त	दा
व	रा	व	वा	ता
री	झे	ल	म	प्
स	त	लु	ज	ती
स	र	स्	व	ती

नदियों के नाम

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....
7. ....
8. ....
9. ....
10. ....
11. ....
12. ....

संपादकीय मण्डल

मुख्य संपादक : प्रवेका कसेरा
सहायक संपादिका : अनुष्का जितानी
आवरण पृष्ठ सज्जा : अक्षत पोद्दार
संकलनकर्ता : आरुषि मित्तल

प्रभारी शिक्षक : डॉ. राजेश कुमार मिश्र
सहायक शिक्षक : श्रीमान संजय कुमार दीक्षित
: श्रीमान प्रेम कुमार सिंह
: श्रीमान अनिल कुमार यादव
: श्रीमती मनदीप कौर

मार्ग-दर्शक : डॉ. अमित जुगरान

निज भाषा उन्नति अहै , सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।।